an>

Title: Need to take suitable remedial measures to check increasing pollution level in Singrauli district, Madhya Pradesh.

श्रीमती रीती पाठक (सीधी)ः हम जानते हैं कि हवा और पानी प्राणी मात्र की अनिवार्य आवश्यकता है, जिसके अभाव में जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है। किन्तु पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक हवा और पानी ही यदि प्रदूषित हो जाएं तो जीवन जीना कितना कठिना होगा, यह सहज ही अकल्पनीय है।

पर्यावरण प्रदूषण एक अति गंभीर वैश्विक समस्या है। ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं इसी पर्यावरण प्रदूषण का परिणाम हैं, जिसकी चिन्ता राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर की जा रही है।

मैं जिस सीधी संसदीय क्षेत्र से आती हूं उसका एक बड़ा हिस्सा सिंगरौली जिले के रूप में अवस्थित है, जिसे लोग ऊर्जा धानी के रूप में जानते हैं। सिंगरौली सन 1840 में पहली बार कोयले की पर्याप्त उपलब्धता के विषय में संज्ञान में आया। तब से लेकर आज तक अपने प्राकृतिक स्रोतों के कारण सिंगरौली देश के बड़े भू-भाग को ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण कई बड़े और छोटे थर्मल पावर प्रोजेक्ट, कोल माइन प्रोजेक्ट यहां स्थित हैं, जिसमें उत्पन्न होने वाले सह-उत्पाद फ्लाई ऐश वायु और जल प्रदूषण का कारण बन गया है जिससे सिंगरौली वासियों का श्वास लेना दूभर हो गया है। पर्याप्त जानकारी के अनुसार लगभग 6 मिलियन टन फ्लाई ऐश प्रतिवर्ष सह-उत्पाद के रूप में निकलता है व शोधों एवं अभिलेखों के आधार पर लगभग 720 किग्रा. पारा व कई भारी पदार्थ प्रतिवर्ष निकलते हैं जो कि सामान्य से कई गुना अधिक है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट व औद्योगिक विष विज्ञान केन्द्र, लखनऊ द्वारा जब सिंगरौली क्षेत्र के 1200 निवासियों की चिकित्सकीय जांच हुई तो उसके अनुसार सिंगरौली वासियों के रक्त में पारा का स्तर सामान्य से कई गुना अधिक पाया गया। जिसके कारण बहुत अधिक मात्रा में बच्चों के श्वास तंत्र की समस्या, डायरिया, निम्न प्रत्युत्पन्न मति, पेटदर्द जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहा बचपन साथ ही महिलाओं में सिरदर्द और अनियमित मेन्सुरेशन और पुरूषों में स्थायी रूप से तंत्रिका तंत्र, मस्तिष्क और किडनी जैसी गंभीर प्राणघातक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं।

इन दिनों हमारे यहां के समाचार पत्र सिंगरौली क्षेत्र में बढ़ रहे प्रदूषण और इनसे पनप रही बीमारियों की चिन्ता निरन्तर प्रकट कर रहे हैं, जिससे जन-मानस डरा-सहमा महसूस कर रहा है। इस क्षेत्र के पर्यावरण प्रदूषण से तीन लाख से अधिक लोग प्रभावित हो रहे हैं, जिसकी पुष्टि तब हुई जब केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार सिंगरौली प्रदूषण के स्तर पर 22वें स्थान पर है।

मैं माननीय मंत्री महोदया से आग्रह करती हूं कि शीघ्रता के साथ कृपापूर्वक सिंगरौली के स्वास्थ्य व जीवन रक्षा हेतु सार्थक कदम उठाने का कष्ट करें और सभी कारपोरेट को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध करा कर आवश्यक पहल हेतु निर्देशित करें, वरना सिंगरौली का प्रदूषण हिरोशिमा-नागासाकी व भोपाल गैस-त्रासदी जैसे घातक परिणाम देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

अतः पुनश्च इस समस्या के निदान हेतु आग्रह करती हूं।